जॉन एंकर बर्ग शो

परमेश्वर की सांत्वना

कोरोनावायरस के दौरान

डॉक्टर जॉन एंकर बर्ग
और कैथी सिम्स

कोरोनावायरस के दौरान परमेश्वर की सांत्वना

डॉक्टर जॉन एंकर बर्ग और कैथी सिम्स के द्वारा

ए टी आर आई पब्लिशिंग के द्वारा छापा गया

कॉपीराइट **2020**
आई एस बी एन **978I 94II 35648**
लाइसेंस नोट्स

इस ई बुक की लाइसेंस हमने आपके व्यक्तिगत आनंद के लिए ली है। इस बुक को ना दोबारा बेच सकते हैं और न किसी को दे सकते हैं। लेखकों के कठिन परिश्रम का आदर करने के लिए धन्यवाद।
ध्यान देने की बात है कि इस पुस्तक में सारे वचन न्यू इंटरनेशनल वर्शन नाम के बाइबल से ली गई है।
कॉपी राइट्स **1973, 1978, 9384** इंटरनेशनल बाइबल सोसायटी के द्वारा।
अनुमति के द्वारा उपयोग। सारे राइट्स रिजर्व्ड है।
जिन वचनों पर इ एस वी का चिन्ह लगा है वे सभी पवित्र बाइबल के इंग्लिश स्टैंडर्ड वर्शन से लिया गया है।
क्रॉसवे का **2001** का कॉपीराइट गुड न्यूज़ पब्लिशर्स का एक पब्लिकेशन सेवकाई है।

पवित्र शास्त्र के जिन वचनों पर एन एल टी का निशान लगाया गया है वह सभी न्यू लिविंग ट्रांसलेशन से लिया गया है। **1996 2004** और **2015** का कॉपीराइट टिंडल हाउस के द्वारा**,** कैरोल स्ट्रीम**,** इलिनॉइस **60188**

विषय सूची

शीर्षक पेज
प्रस्तावना
जब आप चिंतित होते हो तो किसकी ओर मुड़ते हो**?**
आपको भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।
आप परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं।

परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है।
जिसका कोई सहारा नहीं परमेश्वर उसकी सहायता करता है।
संकट के समय में परमेश्वर हमें सांत्वना देता है।
हमें परमेश्वर की किसी आशीष को भूलना नहीं चाहिए।
हमें हर परिस्थिति में परमेश्वर की स्तुति करना सीखना है।
परमेश्वर हमेशा आपके साथ है।
परमेश्वर की विश्वासयोग्यता आप की ढाल है।
परमेश्वर टूटे ह्रदय वालों के समीप है।
बाइबल के वचन हमें सांत्वना क्यों देते हैं**?**
हमारे पिता के घर में हमारे लिए एक स्थान तैयार किया गया है।
हमारा एक सहायक है।
परमेश्वर के हर कार्य का एक उद्देश्य है।
हमारा दृष्टिकोण ही सब कुछ है।
हंसना हमारे लिए जरूरी है।
परमेश्वर के प्रेम से क्या कोई हमें अलग कर सकता है**?**
आपके किसी प्रिय जन की मृत्यु होने पर आपके ऊपर क्या बीतता है**?**
परमेश्वर हमारे आंसू दर्द और कष्ट को दूर करेगा।
हम परीक्षाओं में क्यों पड़ते हैं**?**
परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत रिश्ते का आरंभ हम कैसे कर सकते हैं**?**
लेखकों के बारे में।

प्रस्तावना

हम जानते हैं कि वर्तमान में आपकी परिस्थिति ठीक नहीं है। इस संसार में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसको इस कोरोनावायरस के कारण हानि ना पहुंची हो। आज हर व्यक्ति कई प्रकार की भावनात्मक स्थिति में है। कुछ तो अकेले पड़ गए हैं और फिर कुछ को उनके प्रियजन के गुजर जाने का गम है। बहुत लोगों को इस बात का डर है कि हमारे भविष्य में क्या होने वाला है क्योंकि भविष्य तो निश्चित है **(**शारीरिक और आर्थिक रूप से**)**। हो सकता है कि कोरोनावायरस के कारण आप शारीरिक और भावनात्मक रूप से थक गए होंगे कि कब इस वायरस का अंत होगा। सचमुच आपको उत्साह की आवश्यकता है।

इस कठिन परिस्थिति में जब हम सब संघर्ष कर रहे हैं तो हमारे लिए केवल एक ही शरण स्थान है जहां जाकर आप अपनी हर प्रश्न का जवाब पा सकते हैं। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा आपसे बातचीत करना चाहता है ताकि आप निश्चिंत हो जाएं। हमारी प्रार्थना है कि आप उसकी उपस्थिति का अनुभव करें और उसकी सांत्वना को प्राप्त करें क्योंकि हम उसी परमेश्वर के बारे में आपको बता रहे हैं जिसने हमें कष्ट के समय संभाला।

जब आप चिंतित होते हैं तो किसकी ओर मुड़ते हैं?

किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन. प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएँ। तब परमेश्वर की शान्ति. जो सारी समझ से परे है. तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।
फिलिप्पियों **4:6-7**

उपरोक्त वचन में कहा गया है कि हम चिंता ना करें। लेकिन देखा जाए तो हमारी परिस्थिति ऐसी ही है। जरा विचार करें कि हमसे क्या करने को कहा जा रहा है। जिन बातों की आपको चिंता है उसे प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर के हाथों में सौंप दें। भले आप कैसी भी परिस्थिति में से गुजर रहे होंगे फिर भी धन्यवाद देने के लिए तो कुछ ना कुछ होगा। वर्तमान में यदि आपके पास परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए कुछ भी ना हो फिर भी उसके प्रेम के लिए तो आप उसको धन्यवाद दे सकते हो (भले आपका दिल ना चाहता हो कि ऐसा करें)। यह वचन हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर हमें ऐसा बदल सकता है कि भले हम किसी भी समस्या का सामना करें हम निश्चिंत रहें। आप उसकी उपस्थिति में आए यह जानकर और विश्वास करते हुए कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है और हर परिस्थिति में आपके मन और हृदय को असाधारण शांति से भरे रहने देगा। बाइबल हमें बताती है कि परमेश्वर वह काम हमारे लिए कर सकता है जो हम खुद के लिए नहीं कर सकते।

हमें भयभीत होने की आवश्यकता नहीं।

चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूँ. तौभी हानि से न डरूँगा: क्योंकि तू मेरे साथ रहता है: तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है।
भजन संहिता **23:4**
केवल परमेश्वर जानता है कि आप कैसी परिस्थिति में से गुजर रहे हैं। कोरोनावायरस के कारण इस दुनिया में बहुत सारी ऐसी बातें हैं जो हमें डरा देती हैं जैसे कि अपनी नौकरी. अपना घर. अपना स्वास्थ्य या अपने किसी प्रिय जनों को खो देना. एक भयंकर चीज है। यह हमारे हृदय और हमारे विचारों पर बुरा प्रभाव डालती है और यदि हम इस भय को अपने वश में ना करें तो यह हमें नचा कर रख देगी। कोविड-19 का हमारे शरीर में आना डर उत्पन्न करता है और

इसलिए जहां तक हो सके हमें सुरक्षित रहना है। लेकिन भविष्य में होने वाली बातों के बारे में सोचकर हमें डरने की आवश्यकता नहीं। भय के कारण ही तो लोग आवश्यक सामग्री का अपने घरों में ढेर लगा ले रहे हैं। ऐसा करने पर वे अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि अब हमारे पास जरूरत की सारी वस्तुएं हैं।

जब आपको डर लगता है तो आपके मन में आने वाले नकारात्मक विचारों को दूर करके प्रभु के पास जाकर प्रार्थना करें।

इसलिये हम कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं,

2 कुरिन्थियों **10:5**

भले आपके अंदर कैसे भी विचार आते होंगे लेकिन इतना याद रखें कि आप अकेले नहीं हैं परमेश्वर हमेशा आपके आगे आगे जाता है। वह हमेशा आपके साथ है वह ना आप को त्यागेगा और ना आपको कभी छोड़ेगा। इसलिए आप ना डरे और ना घबराए।

व्यवस्था विवरण **31:8**

आप परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं।

तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।

नीतिवचन **3:5-6**

बहुत कम ही ऐसे लोग हैं जिन पर हम पूरा पूरा भरोसा कर सकते हैं। हमारे जीवन के साथ जुड़े हुए लोगों से जब हम रहस्य की बातें बताते हैं तो उनका बर्ताव कैसा होता है उसे देख कर हम जान सकते हैं कि क्या वे भरोसेमंद हैं कि नहीं। जब आप किसी व्यक्ति पर पूरा पूरा भरोसा करते हैं तो अपने दिल की सारी बातों को उसके साथ बांट सकते हैं। और यदि नहीं तो ऐसे लोगों के साथ ज्यादा समय ना बिताएं।

क्या आप सचमुच परमेश्वर पर भरोसा करते हैं या फिर उन्होंने जो आपके जीवन के लिए योजनाएं रखी है क्या वह आपको पसंद नहीं है? क्या आपको इस बात का डर है कि कब परमेश्वर मुझे पकड़ लेगा और मुझे अपने वश में करके मेरे जिंदगी को तबाह कर देगा। परमेश्वर आपकी जिंदगी को बिगाड़ना नहीं चाहता परंतु आपके जीवन को अपने उत्तम आशीष से भरना चाहता है। वह आपको ऐसे व्यक्ति के रूप में बदलना चाहता है जिसके लिए उसने आपको रचा था। जैसे कि मनुष्यों पर भरोसा करने के लिए हमें उन्हें करीब से जानना आवश्यक है वैसे ही इस महान परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए उसे भी हमें करीब से व्यक्तिगत रूप से जानना जरूरी है। आज हम जिस भय का सामना कर रहे हैं उससे लड़ने के लिए सबसे सामर्थ्य हथियार है कि हम परमेश्वर पर पूरी तरह भरोसा करें।

"परमेश्वर मेरा उद्धार है. मैं भरोसा रखूँगा और न थरथराऊँगा: क्योंकि प्रभु यहोवा मेरा बल और मेरे भजन का विषय है. और वह मेरा उद्धारकर्ता हो गया है।"
यशायाह **12:2**

परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है।

परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है. संकट में अति सहज से मिलनेवाला सहायक।
भजन संहिता **46:1**
इस कठिन समय में आपको बल कहां से मिल सकता है? क्या आप इस बात को जानते हैं कि परमेश्वर प्रेम है और उसने हमें प्रेम करने के लिए और उसके प्रेम को पाने के लिए रचा है। जब हम इस पृथ्वी पर पैदा हुए तो हम परमेश्वर के प्रेम से वंचित थे क्योंकि हम आदम के वंश में पैदा होकर उसके आत्मिक गुणों से भरे हुए थे। जबकि हम परमेश्वर से प्रेम करने के लिए और परमेश्वर के प्रेम को पाने के लिए रचे गए थे लेकिन हम उस से वंचित रह गए। हम इस संसार के मनुष्यों में उस प्रेम को खोजते हैं लेकिन वह प्रेम परमेश्वर के प्रेम के समान नहीं है।
इसलिये हे भाइयो. मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित. और पवित्र. और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।
रोमियों **12:1**
क्या आप अपने सारे बल और शक्ति को खोकर कमजोर महसूस कर रहे हैं? जब हम अपने मन को परमेश्वर के वचन से भरते हैं तो परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल बन जाता है। वह हमारे जीवन की हर आवश्यकता को पूरा करने वाला एकमात्र स्रोत बनना चाहता है (अंतिम स्रोत नहीं)। अपनी सारी समस्याओं को यहोवा परमेश्वर के पास ले जाइए और अपने हृदय में जान लीजिए कि उस से बढ़कर आपको कोई और प्रेम नहीं कर सकता।

जिसका कोई सहारा नहीं परमेश्वर उसकी सहायता करता है।

क्योंकि वह दोहाई देनेवाले दरिद्र का. और दु:खी और असहाय मनुष्य का उद्धार करेगा।
भजन संहिता **72:12**

जब आपको चोट पहुंचती है तब आप मदद के लिए किसके पास जाते हैं? हो सकता है मित्र सांत्वना और उत्साह भरे वचन हमसे बोले लेकिन वे हमारी भावनाओं को नहीं समझ सकते। आप सोचते होंगे कि जिस परिस्थिति से आप गुजर रहे हैं उसे समझ कर सच्चे दिल से आपकी मदद करने वाला कोई नहीं है। लेकिन यह ना भूलें कि जब आप

संकट के समय परमेश्वर को पुकारते हैं तो वह आप की सुनता है। कई बार हम अपनी समस्या को परमेश्वर के पास ना ले जाकर उसका हल खुद ही ढूंढना चाहते हैं। लेकिन वह इंतजार कर रहा है कि हम अपनी समस्याओं को उसके हाथों में सौंपें। वह आपको आपके संकट से छुड़ाकर आपकी आवश्यकता को पूरा करना चाहता है।
मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है. तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।
फिलिप्पियों **4:19**
अपनी मदद खुद करना छोड़ दें और परमेश्वर के पास जाकर उससे सहायता मांगें।

परमेश्वर हर संकट के समय हमें सांत्वना देता है।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो. जो दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है। वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है: ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है. उन्हें भी शान्ति दे सकें जो किसी प्रकार के क्लेश में हों। क्योंकि जैसे मसीह के दु:खों में हम अधिक सहभागी होते हैं. वैसे ही हम शान्ति में भी मसीह के द्वारा अधिक सहभागी होते हैं।
2 कुरिन्थियों **1:3-5**
क्या आपने ध्यान दिया कि इन वचनों में लिखा है कि क्लेश में परमेश्वर हम को शांति देता है**?** यीशु क्लेश के अर्थ को भलीभांति जानता है। क्योंकि क्रूस पर लटकाने से पहले ही उनको बहुत मारा गया और दुख दिया गया। क्रूस मरण एक भयंकर मृत्यु दंड है क्योंकि क्रूस पर या काठ पर लटका हुआ व्यक्ति सांस लेने के लिए बहुत तड़पता है। जिन लोगों ने कभी दर्द का अनुभव नहीं किया वे दूसरों के दर्द को भला कैसे समझ सकते हैं और फिर उनके अंदर तरस नाम की चीज ही नहीं होती। यीशु आपके हर दुख और दर्द को समझ कर आप को सांत्वना दे सकता है क्योंकि उसने भी बहुत दुख और दर्द सहा है। वर्तमान में यदि आप दुख और दर्द सह रहे हैं तो उत्साहित हों क्योंकि भविष्य में किसी ना किसी को आप सांत्वना देने वाले हैं। जब हम कठिन परिस्थितियों में से गुजरते हैं तो हमारा दृष्टिकोण बिल्कुल बदल जाता है और तब से हम दूसरों के दुख दर्द को सही तरीके से समझ पाते हैं। यदि हम ऐसी परिस्थिति में से ना गुजरे तो हो सकता है कि हमारे अंदर थोड़ा भी तरस ना हो।

हमें परमेश्वर के किसी उपकार को कभी भूलना नहीं चाहिए।

हे मेरे मन. यहोवा को धन्य कह: और जो कुछ मुझ में है. वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे! हे मेरे मन. यहोवा को धन्य कह. और उसके किसी उपकार को न भूलना। वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता. और तेरे सब रोगों को चंगा करता है. वही तो तेरे प्राण को नष्ट होने से बचा लेता है. और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बाँधता है. वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है. जिस से तेरी जवानी उकाब के समान नई हो जाती है।

भजन संहिता **103:1-5**
उपरोक्त वचन हमें स्मरण दिलाते हैं कि परमेश्वर हमारे जीवन के हर क्षेत्र में हमारी आवश्यकता को पूरा करने के लिए हमेशा तत्पर रहता है। वह हमारे पापों को क्षमा करता है**.** बीमारी को चंगा करता है**.** हमारे जीवन को पाप के बंधन से अपने लहू के द्वारा छुड़ाता है ताकि हम उसके साथ स्वर्ग में अनंत काल तक जीवित रहे। हमें अपने प्रेम और तरस से भरता है और हमारे ह्रदय की चाहतों को भी पूरा करता है। यदि हम यह जान ले कि हमसे कोई बेहद प्रेम करता है तो यह बात हमें बल और शक्ति देती है कि हम हर परिस्थिति का सामना कर पाते हैं।
देखो**.** पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएँ**:** और हम हैं भी। इस कारण संसार हमें नहीं जानता**.** क्योंकि उसने उसे भी नहीं जाना।
1 यूहन्ना **3:1**

हर परिस्थिति में परमेश्वर की स्तुति करना सीखें।

क्योंकि यहाँ हमारा कोई स्थाई नगर नहीं**.** वरन् हम एक आनेवाले नगर की खोज में हैं। इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान**.** अर्थात् उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं**.** परमेश्वर को सर्वदा चढ़ाया करें। भलाई करना और उदारता दिखाना न भूलो**.** क्योंकि परमेश्वर ऐसे बलिदानों से प्रसन्न होता है।
इब्रानियों **13:14-16**

इस समय काल में जब हम कुछ लोगों की दर्द और दुख भरी कहानी को पढ़ते हैं तो हमारा दिल टूट जाता है। आप अपनी वर्तमान परिस्थिति के कारण बहुत दुखी होंगें। यदि हमारा नजर केवल वर्तमान पर हो तो निश्चित रूप से हम अपनी आशा को खो देंगे। लेकिन हमें यह बात जान लेना है कि हमारा एक भविष्य भी है। आज की हमारी इस परिस्थिति में हम परमेश्वर की स्तुति करना नहीं चाहते हैं। वास्तव में ऐसे समय में परमेश्वर की स्तुति करना एक बलिदान है।

अपने परिवार और अपने मित्रों से दूर रहना अपने कार्य के लिए ना जा पाना और ऐसे स्थानों में जहां हम अक्सर जाया करते थे वहां भी ना जा पाना यह सब हमको अनहोना लगता है। इस लॉकडाउन के समय में जिस शहर में हम रहते हैं उसे भी पहचानना मुश्किल हो जाता है। **(**वास्तव में अभी कुछ दिन पहले एक बहुत बड़ा तूफान हमारे शहर में आया**)**। वर्तमान काल में इस संसार की परिस्थिति को यदि हम देखें तो हम निश्चित रूप से निराश हो जाएंगे। लेकिन परमेश्वर उन लोगों से जो उनसे प्रेम करते हैं कहता है कि हम एक दिन ऐसे नगर में जाएंगे जो सिद्ध होगा और जिस का नाश कभी नहीं होगा। जब हम इस बात को जान ले कि आज हम जिस परिस्थिति में से गुजर रहे हैं उस सब का इस्तेमाल करके परमेश्वर हमें भविष्य के लिए तैयार कर रहा है तो निश्चित रूप से हम परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं। इसलिए नहीं की कठिन परिस्थितियां हमें अच्छी लगती हैं बल्कि इसलिए की आज की परिस्थिति बदल जाएगी। जैसे परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों से कहा**.**

क्योंकि यहोवा की यह वाणी है. कि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ. वे हानि की नहीं. वरन् कुशल ही की हैं. और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा।
यिर्मयाह **29:11**
वैसे ही आपके जीवन और भविष्य के लिए भी परमेश्वर अद्भुत योजनाएं रखा है।

परमेश्वर हमेशा आपके साथ है

तू हियाव बाँध और दृढ़ हो. उनसे न डर और न भयभीत हो: क्योंकि तेरे संग चलनेवाला तेरा परमेश्वर यहोवा है: वह तुझ को धोखा न देगा और न छोड़ेगा।"
व्यवस्थाविवरण **31:6**
मूसा इस बात को जानता था कि प्रतिज्ञा की हुई देश में प्रवेश करने से पहले इस्राएल के लोगों को वहां बसी हुई जातियों से युद्ध करना होगा। युद्ध के लिए जाने की बात को सुनकर सब डर जाते हैं इसलिए परमेश्वर ने मूसा के द्वारा उन लोगों से कहा. तू हियाव बांध और दृढ़ हो। इस पद को परमेश्वर ने पहले भी कई बार कहा उन्हें स्मरण दिलाने के लिए कि परमेश्वर खुद उनके लिए युद्ध लड़ेगा क्योंकि जिस देश में वे जाने वाले थे वहां पर सचमुच बड़े-बड़े राक्षस रहते थे। यह पद आज हम सब को भी बहुत दृढ़ बनाता है। हम जहां कहीं भी जाएं परमेश्वर हमारे साथ चलता है और हमेशा हमारे साथ बना रहता है। कभी हमें अकेला नहीं छोड़ता कि हम अपनी जिंदगी के युद्ध को खुद लड़ें।
हम पहले इतिहास अध्याय **28** के वचन **20** में देखते हैं कि दाऊद अपने पुत्र सुलैमान से कहता है.
फिर दाऊद ने अपने पुत्र सुलैमान से कहा. "हियाव बाँध और दृढ़ होकर इस काम में लग जा। मत डर. और तेरा मन कच्चा न हो. क्योंकि यहोवा परमेश्वर जो मेरा परमेश्वर है. वह तेरे संग है: और जब तक यहोवा के भवन में जितना काम करना हो वह न हो चुके. तब तक वह न तो तुझे धोखा देगा और न तुझे त्यागेगा।
1 इतिहास **28:20**
परमेश्वर आपकी मदद करेगा कि आप उसकी योजना को अपने जीवन में पूरा करें इस पृथ्वी रूपी रणभूमि में वह आप को अकेला नहीं छोड़ेगा।

परमेश्वर की विश्वासयोग्यता आप की ढाल है।

वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा. और तू उसके परों के नीचे शरण पाएगा. उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी।
भजन संहिता **91:4**

परमेश्वर की हमारे प्रति विश्वासयोग्यता को हम पूरी तरह समझ नहीं पाते। यदि हम यह समझ जाएं कि वह हमारी ढाल और झिलम है तो भले शैतान हमारे सामने कितना भी बड़ा जाल बिछाए हम बिल्कुल नहीं डरेंगे। इफीसियों **6** के वचन **6** में लिखा है**.**

मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों के समान दिखाने के लिये सेवा न करो**.** पर मसीह के दासों के समान मन से परमेश्वर की इच्छा पर चलो**.**

इफिसियों **6:6**

एक बार एक किसान ने एक खेत में एक मुर्गी को देखा जो पूरी तरह जल गई थी। जब उसने पैर से उसे हटाया तो क्या देखा कि बहुत सारे मुर्गी के बच्चे उसके नीचे से बाहर निकल आए। उस मुर्गी ने अपने पंखों के नीचे अपने बच्चों को आग से बचाया था। यह बात मुझे बहुत सांत्वना देती है क्योंकि मैं जानता हूं कि परमेश्वर अपने पंखों की आड में मुझे छुपाए रखता है और इसीलिए कोई विपत्ति मेरे पास नहीं आएगी।

परमेश्वर टूटे ह्रदय वालों के करीब है

यहोवा टूटे मनवालों के समीप रहता है**.** और पिसे हुओं का उद्धार करता है।

भजन संहिता **34:18**

क्या आपको लगता है कि आप पूरी तरह टूट गए हैं**?** क्या ऐसा लगता है कि अब आगे बढ़ने के लिए बल ही नहीं रहा**?** हो सकता है कि आपके छाती में दर्द हो और ऐसा लगता हो कि आपका ह्रदय सचमुच फट जाएगा। ऐसे समय में आपको जो सांत्वना की जरूरत है वह केवल ऊपर से ही आ सकता है। ऐसे समय में जो अलौकिक शांति की आपको जरूरत है वह केवल परमेश्वर ही आपको दे सकता है। भजन संहिता **73** में भजन कार कहता है कि दुष्टों को समृद्ध होते हुए देखकर वह निराश हो गया है।

सचमुच इस्राएल के लिये अर्थात् शुद्ध मनवालों के लिये परमेश्वर भला है। मेरे डग तो उखड़ना चाहते थे**.** मेरे डग फिसलने ही पर थे। क्योंकि जब मैं दुष्टों का कुशल देखता था**.** तब उन घमण्डियों के विषय डाह करता था। क्योंकि उनकी मृत्यु में वेदनाएँ नहीं होतीं**.** परन्तु उनका बल अटूट रहता है।

भजन संहिता **73:1-4**

जब हम अपने जीवन में संघर्ष कर रहे होते हैं तो दुष्टों को कुशल मंगल देखकर हम बिल्कुल खुश नहीं होते। वास्तव में भजन कार जान जाता है कि उसका बल कौन है। इसलिए वह कहता है**.**

मेरे ह्रदय और मन दोनों तो हार गए हैं**.** परन्तु परमेश्वर सर्वदा के लिये मेरा भाग और मेरे ह्रदय की चट्टान बना है।

भजन संहिता **73:26**

परमेश्वर को अपना बल बनाकर अपने जीवन की हर आवश्यकता को प्राप्त कर लीजिए।

बाइबल के वचन हमें सांत्वना क्यों देते हैं**?**

सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश. और समझाने. और सुधारने. और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है. ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने. और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।
2 तीमुथियुस **3:16-17**
बाइबल के सारे **66** पुस्तकें पवित्र आत्मा की प्रेरणा के द्वारा लिखे गए हैं। परमेश्वर ने पवित्र आत्मा के सामर्थ्य के द्वारा मनुष्य को लिखने के लिए वचन दिए। परमेश्वर हमारा सृष्टि कर्ता है इसलिए वह हमें हम से भी अधिक बेहतर जानता है। हमारे जीवन में भी ऐसे समय थे कि कैथी और मैं पूरी तरह टूट गए थे और हमें लगा कि हमारे आंसू कभी नहीं रुकेंगे। पिछले **2** वर्षों में मैंने अपनी माता और अपने भाई को खो दिया। लेकिन जब मैं बाइबल को उठाता और पढ़ना शुरू करता तो परमेश्वर मुझे ऐसी सांत्वना देता कि कोई और मुझे नहीं दे सकता। जब आप बहुत निराश होते हो तब परमेश्वर की पवित्र आत्मा को अनुमति दो कि वह आपसे अपने जीवन दायक वचन के द्वारा आप से बातचीत कर सके। वास्तव में बाइबल का कोई भी वचन भविष्यवक्ताओं के मर्जी से नहीं लिखा गया है। पर पहले यह जान लो कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती.
2 पतरस **1:20**

पिता परमेश्वर के घर में हमारे लिए एक स्थान तैयार किया गया है।

"तुम्हारा मन व्याकुल न हो: परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं. यदि न होते तो मैं तुम से कह देता: क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूँ. तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं रहूँ वहाँ तुम भी रहो।
यूहन्ना **14:1-3**
जब आपको पता चले कि आप जिससे प्रेम करते हैं वह व्यक्ति आपसे भी बेहद प्रेम करता है तो इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है। जब आप किसी से प्यार करना शुरू करते हैं तो आप चाहेंगे कि जितना अधिक हो सके उतना अधिक समय उस व्यक्ति के साथ बिताए क्योंकि वह आपको बहुत उत्साहित करता है।
एक दिन यीशु आएगा और हमें अपने पिता के घर ले जाएगा ताकि हम हमेशा के लिए उसके साथ रहे। उस सिद्ध स्थान में हम हमेशा के लिए रहेंगे। यीशु हम से बेहद प्रेम करता है और बदले में हमसे वह कोई उम्मीद नहीं रखता। भले आप कैसी भी परिस्थिति में से गुजर रहे हो जब आप उसे देखेंगे तो आपके सारे दुख दूर हो जाएंगे।

हमारा एक सहायक है

मैं पिता से विनती करूँगा. और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे। अर्थात् सत्य का आत्मा. जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता. क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है: तुम उसे जानते हो. क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है. और वह तुम में होगा।

यूहन्ना **14:16-17**

यीशु के क्रूस मरण से पहले उसने अपने चेलों को इकट्ठा किया और उनसे कहा कि मैं जहां जा रहा हूं वहां तुम नहीं आ सकते। यह सुनकर चेले तो हिल गए क्योंकि वे यीशु की आराधना करते थे और उसका अनुकरण भी और अब वह कहता है कि तुम मेरे साथ नहीं आ सकते। वास्तव में चेलों को लगा होगा कि अब तो जीना बेकार है।

यीशु ने अपने चेलों को उत्साहित करते हुए कहा कि वह पिता परमेश्वर से विनती करेगा कि वह एक सहायक को उनके लिए भेजें। यदि आपने अपना जीवन यीशु को दिया है तो निश्चित रूप से पवित्र आत्मा आपके अंदर वास करता है।

परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा. वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा. और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है. वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

यूहन्ना **14:26**

पवित्र आत्मा की आवाज को सुने और उसके द्वारा उत्साह और सांत्वना प्राप्त करें। यदि आपने अभी तक यीशु को स्वीकार नहीं किया है तो इस पुस्तक के अंत में हम आपकी मदद करेंगे कि आप अपने जीवन को यीशु को कैसे दे सकते हैं।

परमेश्वर हर कार्य को एक उद्देश्य के साथ करता है।

हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं. उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं: अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों. ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।

रोमियों **8:28-29**

परमेश्वर हर कार्य को एक भले उद्देश्य के साथ करता है और कभी कभी हम इस बात को जान नहीं पाते हैं। इस संसार में जीते समय कई विपत्तियां हम पर पड़ती हैं। अपने शरीर में बहुत वेदना भी हम सहते हैं. लेकिन ऐसे समय में भी परमेश्वर हमारी भलाई के लिए काम करता रहता है। ऐसी कई बातें हैं जो हमें समझ में नहीं आती क्योंकि हम परमेश्वर नहीं हैं।

क्योंकि यहोवा कहता है. मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं हैं. न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है।

यशायाह **55:8**

यदि हम संकट के समय प्रश्न करते रहेंगे तो निश्चित रूप से हम निराश होकर कड़वेपन से भर जाएंगे। कठिन समय में यदि हम विचार करके देखें तो यह जान पाएंगे कि उसका परिणाम हमें प्रभु यीशु मसीह के स्वरूप में बदलना ही है। यदि हम परमेश्वर से पूरे दिल से प्रेम करें तो निश्चित रूप से संकट के समय में भी हम मदद के लिए उसी के पास जाएंगे।

हमारा दृष्टिकोण ही सब कुछ है।

क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के सामने. जो हम पर प्रगट होनेवाली है. कुछ भी नहीं हैं।
रोमियों **8:18**
हम ऐसे कई काम कर बैठते हैं जो किसी ना किसी तरह हमें ठेस पहुंचाती है। जैसे कि जब हम कसरत करना शुरू करते हैं तो आरंभ में हमारी मांसपेशियों में कुछ दर्द तो होता ही है। तो फिर हमारे समाज में कई लोग कसरत क्यों करते हैं? क्योंकि अच्छे परिणाम को प्राप्त करने के लिए थोड़ा दर्द सहना पड़ता है। भले परिणाम को पाने के लिए थोड़ा दर्द हम सह सकते हैं।
प्रेरित पौलुस जब फिलिप्पियों को पत्र लिखता है तो इस प्रकार कहता है.

परन्तु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं. उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ। जिसके कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई. और उन्हें कूड़ा समझता हूँ. जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ और उसमें पाया जाऊँ: न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ. जो व्यवस्था से है. वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है: ताकि मैं उसको और उसके मृत्युञ्जय की सामर्थ्य को. और उसके साथ दु:खों में सहभागी होने के मर्म को जानूँ. और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ कि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुँचूँ।
फिलिप्पियों **3:7-11**

हे भाइयो. मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ: परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर. आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ. निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ. ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।
फिलिप्पियों **3:13-14**

हमारे लिए हंसना बहुत मुख्य है।

मन का आनन्द अच्छी औषधि है. परन्तु मन के टूटने से हड्डियाँ सूख जाती हैं।

नीतिवचन **17:22**

कठिन परिस्थिति में से गुजरते समय जब कुछ ना समझे तो बस हंसना शुरू कर दीजिए। हंसना अनिवार्य है क्योंकि हंसने से तनाव कम होता है. शरीर के अंग मजबूत होते हैं टेंशन दूर होता है. हमारी इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है और साथ ही दर्द भी दूर हो जाता है।

निम्नलिखित वचन ऐसे समय में लिखा गया जब इस्राएल का देश चारों ओर से दूसरे देशों के द्वारा घिरा हुआ था और फिर भी यहां हंसी के बारे में लिखा हुआ है।

तब हम आनन्द से हँसने और जयजयकार करने लगे: तब जाति जाति के बीच में कहा जाता था. "यहोवा ने इनके साथ बड़े बड़े काम किए हैं।"

भजन संहिता **126:2**

"परमेश्वर का प्रेम: परमेश्वर के हृदय को करीबी से जानना" इस पुस्तक में ओसवाल्ड चैंबर्स हमें निम्नलिखित पद पर मनन करने के लिए विवश कर देते हैं। इस पद की विशेषता यह है कि जो कुछ घटा हमने उसकी उम्मीद भी नहीं की थी।

"तब हम आनंद से भर कर हंसने लगे और प्रभु की स्तुति में गीत गाने लगे।"

हमने कभी सोचा भी नहीं था कि हमारे साथ ऐसा होगा। विपत्ति के आने पर हमारे मन में इस प्रकार की विचारधारा आती है। बहुत लोगों ने मृत्यु की तराई में से होकर ही अपनी जान बचाई है. हरी हरी चिरायियों पर चलकर नहीं। कभी-कभी हम बादल में प्रवेश करने से डरते हैं लेकिन यदि जाकर देखें तो उन बादलों के बीच में उजाले को देख सकते हैं। वास्तव में जब हम दुख और कष्ट के समय से गुजरते हैं तभी सच्ची ज्योति को देख पाते और यही नहीं हमें एहसास भी हो जाता है कि यदि हम इसमें से नहीं गुजरते तो हमको इस प्रकार का अनुभव प्राप्त भी नहीं होता। इसलिए हिम्मत ना हारे। विश्वास रखें कि परमेश्वर निश्चित रूप से आपकी परिस्थिति को ठीक करेगा आप को पुनर्स्थापित करेगा ताकि आप फिर से हंस सके।

क्या कोई भी बात हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकती है?

कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश. या संकट. या उपद्रव. या अकाल. या नंगाई. या जोखिम. या तलवार?

रोमियों **8:35**

परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है. जयवन्त से भी बढ़कर हैं। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ कि न मृत्यु. न जीवन. न स्वर्गदूत. न प्रधानताएँ. न वर्तमान. न भविष्य. न सामर्थ्य. न ऊँचाई. न गहराई. और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है. अलग कर सकेगी।

रोमियों **8:37-39**

परमेश्वर से हमें कोई भी बात अलग नहीं कर सकती इस पद को समझना जरा कठिन है। बहुत लोग एक दूसरे से इस प्रकार प्रेम करते हैं कि विपरीत की परिस्थितियां उन्हें बड़ी जल्द अलग कर देती हैं। इसलिए तो दुनिया भर में इतने सारे तलाक देखे जाते हैं। परमेश्वर के सच्चे प्रेम को समझना हमारे लिए मुश्किल है क्योंकि ऐसा प्रेम ना हम दूसरे मनुष्यों में और ना ही अपने अंदर देख पाते हैं। परमेश्वर हमसे हर परिस्थिति में बेहद प्रेम करता है। इस प्रेम का कोई भी कारण नहीं है। इसलिए जब हम गलती कर बैठते हैं तो हमारे अंदर ऐसी भावना आती है कि परमेश्वर अब हम से कम प्रेम करेगा।

बाइबिल में दिए गए विवरण के द्वारा यह पता चलता है कि परमेश्वर के दूत और शैतान दोनों हमसे बहुत ही बलवान हैं लेकिन यह दोनों भी हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकते। परमेश्वर के प्रेम से जो बातें हमें अलग नहीं कर सकती वह इस प्रकार हैं**.** मृत्यु**.** जीवन**.** वर्तमान की बातें और भविष्य की बातें कोई शक्ति या स्वर्ग अथवा पृथ्वी की कोई ताकत या फिर कोई भी सृष्टि। वास्तव में कोई भी बात हमें मसीह के प्रेम से अलग नहीं कर सकती। और फिर यह हमारे खुद के हरकत भी हो सकते हैं। इसलिए आपके जीवन में भले जो कुछ भी खड़ा हो या फिर आपने कोई भी गलती कर दी हो चिंता ना करें अब भी परमेश्वर आपसे प्रेम करता है। आपके किसी भले कार्य के कारण वह आप से प्रेम नहीं करता बल्कि आप आप हैं इसलिए वह आपसे प्रेम करता है।

आप अपने प्रिय जन को मरते हुए कैसे देख सकते हैं**?**

पर उसने मुझ से कहा**.** **"**मेरा अनुग्रह तेरे लिये बहुत है**:** क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।**"** इसलिये मैं बड़े आनन्द से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूँगा कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती रहे।

2 कुरिन्थियों **12:9**

इस जीवन की यात्रा में सबसे अधिक दुख हमें तब होता है जब हम अपने प्रिय जन को खो देते हैं। हम इसे समझने की कोशिश करते हैं और इस विषय में हमारे मन में कई प्रश्न भी उठते हैं। वास्तव में यह तब ज्यादा सच लगता है जब हमारे प्रिय जन कोरोनावायरस के कारण मरे हों क्योंकि हम उनके अंतिम दिनों में उनके साथ रहकर उन्हें सांत्वना नहीं दे पाते हैं।

यह बात हमारे समझ के परे है कि उनकी मृत्यु ऐसे क्यों हुई। यदि आप सवाल करते रहोगे तो दुख में डूब जाओगे और आपके अंदर कड़वापन भर जाएगा। थोड़ा समय तो आप दुखी जरूर होंगे और फिर कुछ दिन पुरानी यादें आती रहेंगी लेकिन अंत में आपको इस परिस्थिति से बाहर आना होगा। हम सब के लिए आंसू बहाना जरूरी है। जब मेरी पत्नी गुजर गई तो मैंने भी बहुत आंसू बहाए। यह आंसू बहाने का समय प्रत्येक व्यक्ति के लिए भिन्न होता है इसलिए कोई भी आपको जबरदस्ती इस स्थिति से बाहर निकालने की कोशिश ना करें।

आप अपने दुख को व्यर्थ ना जाने दे। ऐसे समय में परमेश्वर से पूछें कि इस दुख के दौरान वह आपको क्या सिखाना चाहता है और कौन सा कार्य करवाना चाहता है। आप समय निकालकर अपने हृदय को परमेश्वर के सम्मुख खोलें और उसे अनुमति दें कि वह अपने अनादि प्रेम के द्वारा आपके टूटे हृदय को चंगा कर दे।

परमेश्वर हमारे आंसु दर्द और दुख को दूर करेगा

वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा: और इसके बाद मृत्यु न रहेगी. और न शोक. न विलाप. न पीड़ा रहेगी: पहली बातें जाती रहीं ।"

प्रकाशितवाक्य **21:4**

दुख सहते समय हमारे लिए यह कल्पना करना मुश्किल होता है कि भविष्य में ऐसा एक समय आ रहा है जब हमें कोई भी दुख नहीं होगा। हमारे करीबी भविष्य के विषय में सोचने पर हमें सांत्वना प्राप्त होती है क्योंकि हम जानते हैं कि इस महामारी का अंत जल्द होने वाला है। निराश ना होने के लिए हमें सबसे बड़ी प्रेरणा तब प्राप्त होती है जब हम हमारे अनंत काल के भविष्य के बारे में सोचते हैं। हम में से जितनो ने प्रभु यीशु मसीह को ग्रहण किया है भविष्य में बिना दर्द और दुख का जीवन बिताने जा रहे हैं। इस सिद्ध संसार के बारे में परमेश्वर बाइबिल में कुछ झलक दिखाकर हमें उत्साहित करता है।

आज आपका जीवन जैसा भी हो यह न भूलें कि परमेश्वर दूर नहीं है। आपके जीवन के हर विषय की उसे परवाह है **(** आपके आंसुओं की भी**)**।

तू मेरे मारे मारे फिरने का हिसाब रखता है: तू मेरे आँसुओं को अपनी कुप्पी में रख ले**!** क्या उनकी चर्चा तेरी पुस्तक में नहीं है**?**

भजन संहिता **56:8**

विश्राम निश्चित है यह साबित करने के लिए कि परमेश्वर आपको नहीं भूलता। आपके दुख के समय वह आपको सांत्वना देना चाहता है।

हम परीक्षाओं में क्यों पड़ जाते हैं**?**

हे मेरे भाइयो. जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो. तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो. यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ. और तुम में किसी बात की घटी न रहे।

याकूब **1:2-4**

यदि आप मसीही हैं तो क्या यह सोच कर चकित होते हैं कि आप परीक्षा में क्यों पड़ते हैं**?** इस सवाल का जवाब इन वचनों में है। हम परीक्षा में इसलिए पढ़ते हैं क्योंकि हमारा विश्वास परखा जाता है ताकि हमें धीरज प्राप्त हो और

हम हर संकट का सामना कर सके। परमेश्वर सर्वज्ञानी है और इसलिए वह जानता है कि हर परीक्षा के समय आपका बर्ताव कैसा होगा लेकिन परखे जाते समय आपका विश्वास परमेश्वर में बढ़ जाता है। अपने पिछले दिनों के बारे में जरा विचार करें कि परमेश्वर ने आपकी मदद कैसे की थी तो आप निश्चित रूप से आने वाले भविष्य को परमेश्वर पर विश्वास करते हुए जी सकते हैं। हो सकता है कि इस कोरोनावायरस के द्वारा परमेश्वर आपको मौका देता है कि आप अपने जीवन की इस दौड़ भाग में जरा रुक कर विचार करें और परमेश्वर के साथ अपने संबंध को और गहरा बनाएं।

और यदि आप मसीही नहीं है तो आप जिन परिस्थितियों में से गुजरते हैं उसके द्वारा यह समझ जाएं कि आप अकेले इस जीवन को नहीं जी सकते और इसलिए अपने आप को अपने जीवन को परमेश्वर के हाथों सौंप दें।

परमेश्वर के साथ एक व्यक्तिगत रिश्ता कैसे बनाएं**?**

यदि आप उस परमेश्वर के साथ जो आनंद**.** क्षमा और अनंत जीवन का वायदा करता है रिश्ता जोड़ना चाहते हैं तो निम्नलिखित कार्यों को करें।

1 यह विश्वास करें कि परमेश्वर है और उसने अपने इकलौते पुत्र प्रभु यीशु मसीह को इस पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में भेजा।

यूहन्ना **3:16 :**रोमियो **10:9**

2 परमेश्वर के इकलौते पुत्र प्रभु यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा इस नए जीवन के दान को स्वीकार करें।

ईसीसीओ **2:8.9**

3 परमेश्वर की योजना को अपने जीवन में पूरा करने के लिए अपने आप को समर्पित करें।

1 पतरस **1: 21-23:** ईसीसीओ **2:1-7**

4 यह निर्णय ले कि आज से प्रभु यीशु मसीह आपके जीवन का अध्यक्ष और मालिक होगा।

पहला यूहन्ना **4:15:** मती **7:21-27**

परमेश्वर के साथ रिश्ता जोड़ने के लिए कोई विशेष सूत्र या कोई मंत्र नहीं है। लेकिन निम्नलिखित इस प्रार्थना को दोहरा कर आप विश्वास के साथ प्रभु को अपने जीवन में स्वीकार कर सकते हैं**:**

प्रभु यीशु मैं मानता हूं कि मैंने पाप किया है। और मैं जानता हूं कि मैं अपने आप को नहीं बचा सकता। क्रूस पर मर कर मेरे स्थान को लेने के लिए धन्यवाद। मैं विश्वास करता हूं कि आप मेरे लिए मरे और उस बलिदान को अपने लिए स्वीकार करता हूं। मैं अपने सारे भरोसे को खुद के ऊपर से हटाकर आपके ऊपर रखता हूं। मैं अपने जीवन के द्वार को खोलकर आपको अपना प्रभु और उद्धार कर्ता के रूप में स्वीकार करता हूं कि आज से आप मेरे जीवन पर शासन करें। मेरे पापों को क्षमा करके मुझे अनंत जीवन देने के लिए धन्यवाद। आमीन।

यदि आपने यह निर्णय लिया है तो मैं आपको बधाई देता हूं। क्योंकि आपने अपने जीवन का सबसे बड़ा निर्णय लिया है। परमेश्वर के साथ और करीबी रिश्ते के लिए हमारे **JAshow.org** जाएं। और निम्नलिखित पते पर हम से संपर्क करके ज्यादा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं

jasnews@jashow.org

डॉक्टर जॉन एंकर बर्ग एक प्रसिद्ध व्यक्ति हैं और जॉन एंकर बर्ग शो के होस्ट हैं जिन्होंने **150** पुस्तकें और **155** स्टडी गाइड लिखे हैं। बाइबिल पर आधारित निम्नलिखित पुस्तकों के **2** मिलीयन कॉपी के बेचे जाने के भी वे कारण हैं**:**

यीशु के विषय में बड़ी बात क्या है**?**

बाइबल के पक्ष में खड़े होना।

60 सेकंड में परमेश्वर

जॉन एंकर बर्ग शो में केथी सिम्स एग्जीक्यूटिव स्टाफ का रोल करती हैं और इन्होंने भी कई पुस्तकें लिखी हैं। परमेश्वर के वचन के लिए इनके अंदर बहुत जुनून है और लोगों की वह मदद करती हैं कि परमेश्वर के वचन को समझ कर अपने जीवन में उसका उपयोग कर सकें।